अमिया और कीड़े मकोड़ों की भाषा समझनेवाली बुढ़िया

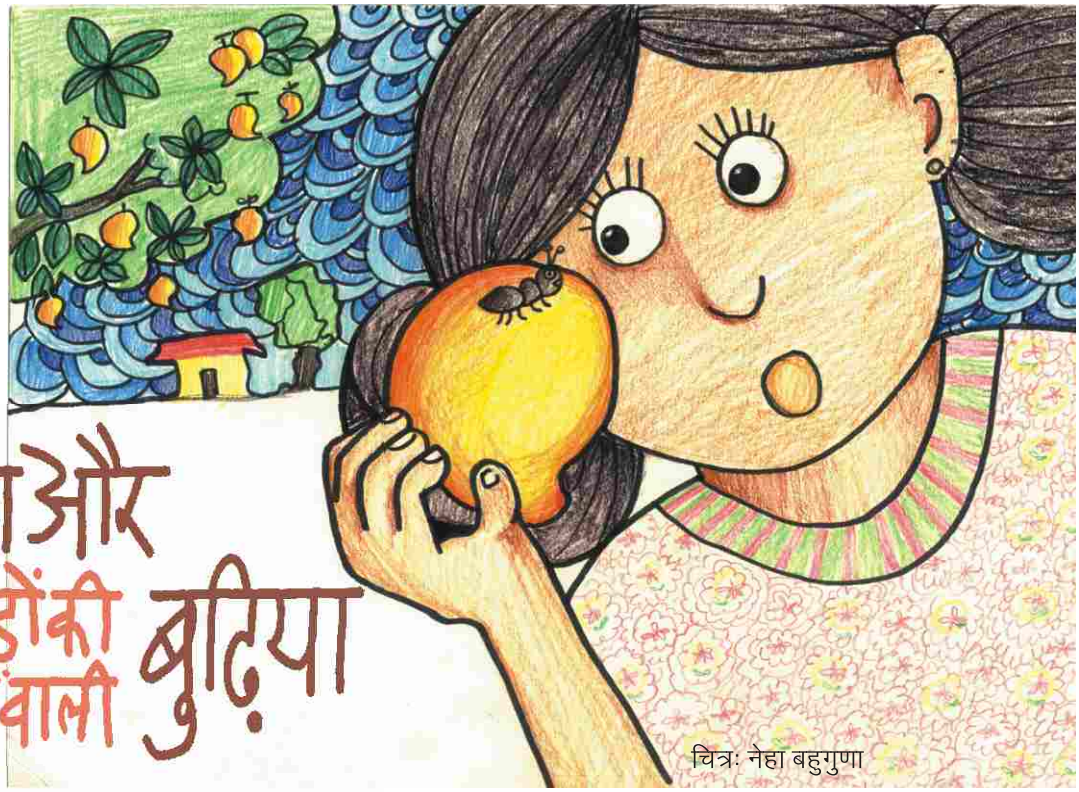

चित्रः नेहा बहुगुणा

प्रभात

आमों की बगिया में हर ओर छाया ही छाया थी। पत्तियों के बीच से आती धूप के झिलमिल छल्ले कहीं-कहीं दिख जाते थे। छाया से भरी ज़मीन पर वे धूप के फूलों की तरह बिखरे थे। हवा धीमे संगीत की तरह सुनाई दे रही थी। जिस तरह झरने के पानी को छुआ जा सकता था उसी तरह इसे भी छुआ जा सकता था।

तो ऐसी वह अमराई थी जिसमें अमिया अभी-अभी पहुँची थी। माँ ने उसे एक सुन्दर टोकरी दी थी। पहले खजूर की टहनियों को धागों की तरह चीरा गया था। फिर उन्हें गूँथकर बहुत ही सुन्दर टोकरी बुनी गई थी। आम के बगीचे में रात की हवा ने बहुत सारे कच्चे आमों को झड़ा दिया था। अमिया उन्हें बीन-बीनकर टोकरी में रख रही थी। वह जिस आम के नीचे बीन रही थी उस पर बहुत-से चींटे उतर-चढ़ रहे थे। लग रहा था जैसे सैंकड़ों मज़दूर किसी कारखाने में व्यस्त हों।

चींटे आम की टहनियों और पत्तियों से गिर-गिरकर नीचे आ रहे थे। कभी कोई चींटा अमिया के कँधे पर गिरता, कभी कोई बाँह पर। कभी कोई सिर पर गिरता, कभी कोई नाक पर।

"इन चींटों ने तो नाक में दम कर दिया है।" अमिया ने कान पर टहलते चींटे को छिटकते हुए कहा।

अमिया की आवाज़ सुनकर बगीचे की बुढ़िया भी उधर आ गई। वह कीड़े-मकोड़ों की भाषा आराम से समझ लेती थी। उसके लिए यह पलकें झपकाने जितना भी मुश्किल नहीं था। सरकण्डों के रंग के बालों वाली उस बुढ़िया ने देखा कि चींटा पलटकर अमिया की तरफ आ रहा था। उसने अमिया से कहा, "जानती हो यह चींटा तुमसे क्या पूछ रहा है?"

"नहीं, क्या? चींटा भला क्या पूछ सकता है? वह पूछना जाने भी तो!" अमिया ने अकबकाते से कहा।

"यही तो बात है, प्यारी बच्ची। तुम इस बेचारे चींटे की आवाज़ वैसे ही नहीं सुन पा रही हो जैसे पसीने की आवाज़ नहीं सुन पाती हो। क्या तुमने कभी पसीने की आवाज़ सुनी है? मैं तो खैर वह भी सुन लेती हूँ। बहरहाल यह चींटा तुमसे पूछ रहा है कि अमिया जी, यह नाक में दम करना क्या होता है? हम भी तो जानें कि हम ऐसा क्या करते हैं जिसे तुम नाक में दम करना कह रही हो?" अमिया का जवाब सुनने के लिए चींटा वहीं चकरघिन्नी हो रहा था।

"ऐसा तो मेरे जीवन में पहली बार हो रहा है।" अमिया ने कहा।

चींटा फिर से अमिया की तरफ पलटकर आया। बुढ़िया ने कहा, "चींटा पूछ रहा है कि हम चींटे ऐसा क्या करते हैं जो तुम्हारे जीवन में पहली बार हो रहा है?"

"क्या इसे हरेक वाक्य का मतलब समझाना पड़ेगा?" अमिया ने बुढ़िया से पूछा।

बुढ़िया बोली, "चींटा कह रहा है कि तुमने ऐसा समझाया ही क्या है जो कह रही हो कि तुम्हें समझाना पड़ेगा। जानती हो तुमने अपने कान पर मुझे कितनी ज़ोर से मसला है।"

अमिया को अब समझ आ रहा था कि चींटा इतने बेतुके सवाल क्यों पूछ रहा है?

उसे यह भी समझ आ रहा था कि उसकी टोकरी कच्चे आमों से भर गई थी। और नाक कच्चे आमों की सुगंध से भर गई थी। अब वह आम की बगिया से घर लौट आई थी। हर चीज़ उसे बहुत साफ-साफ समझ में आ रही थी। मगर उसे अभी तक यह समझ नहीं आ रहा था कि सरकण्डों के रंग के बालों वाली बुढ़िया चींटे की भाषा कैसे समझ लेती है?